वेदों का अपौरुषेयत्व

अग्निसोमस्वरूप अथवा रयिप्राणस्वरूप अथवा वाङ्मनःप्राणस्वरूप यह वेदचतुष्टयी पौरुषेय अर्थात् पाञ्चभौतिक शरीरधारी पुरुष (जीव) द्वारा निर्मित है—यह तो कहा ही नहीं जा सकता, क्योंकि यह पुरुष तो सृष्टि-क्रम में बहुत पीछे की वस्तु है। इसलिये इनके अपौरुषेयत्व में तो किसी को भी संदेह नहीं हो सकता। हाँ इनके प्रतिपादक ग्रन्थात्मक वेदों के अपौरुषेयत्व के सम्बन्ध में अवश्य मतभेद है।

ये ग्रन्थात्मक वेद भी प्राणविध वेदों के समान ही अपौरुषेय हैं—ऐसा मीमांसकों का सिद्धान्त है। उनका कहना यह है कि वाक्य प्रयोग किसी के प्रति कुछ बताने

Scanned with CamScanner

के लिये ही किया जाता है, इसलिये वाक्यप्रयोग से पहले वक्ता को विवक्षित अर्थ का ज्ञान होना चाहिए। वह ज्ञान उसको प्रत्यक्षादि प्रमाणों से ही हो सकता है। इसलिये साधारण वक्ता प्रत्यक्षादि प्रमाणान्तर से अर्थज्ञान करके ही उस अर्थ को बताने के लिये प्रयत्नपूर्वक शब्द का प्रयोग करता है। इसका विशेष विवरण पाणिनीय[1] शिक्षा में देखिये।

इस प्रकार प्रमाणान्तर से अर्थज्ञान करके प्रयुक्त वाक्य पौरुषेय[2] कहलाते हैं, जो वाक्य प्रमाणान्तर से अर्थ उपलब्ध करके प्रयुक्त नहीं हुए हैं वे अपौरुषेय हैं। ग्रन्थात्मक वेद ऐसे ही हैं।

इसी आधार पर भवभूति की यह उक्ति है—

लौकिकानां हि साधूनाम् अर्थं वागनुवर्तते।
ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति॥

अर्थात् लौकिक आप्त पुरुषों की वाणी अर्थानुसार प्रवृत्त होती है, इसके विपरीत आद्य ऋषियों की वाणी के पीछे अर्थ चलता है। पौरुषेय वाक्यों में भ्रम प्रमाद, विप्रलिप्सा आदि की सम्भावना रहती है, अतः उनको स्वतःप्रमाण नहीं माना जाता, वैदिक वाक्यों में यह बात नहीं है, अतः अप्रामाण्य की संभावना उनके विषय में की ही नहीं जा सकती, फलतः वे स्वतःप्रमाण माने जाते हैं।

'बुद्धिपूर्वा कृतिर्वेदे' इस वैशेषिक वचन के अनुसार सिद्ध होता है कि वेद पौरुषेय हैं, भले ही वे ईश्वरप्रोक्त हों अथवा ऋषिप्रोक्त हों।

यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै।
तं ह देवमात्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षुर्वै शरणं प्रपद्ये॥

इत्यादि मन्त्रों से सिद्ध होता है कि वेद ईश्वरकृत हैं।

यामृषयो मन्त्रकृतो मनीषिणोऽन्वैच्छन् देवास्तपसा श्रमेण।
तां वैदीं वाचं हविषा यजामहे, सा नो दधातु सुकृतस्य लोके॥

इस मन्त्र से सिद्ध होता है कि वेद ऋषिविरचित हैं।

इन दोनों मतों में आप्तोक्तत्वेन वेद को परतः प्रामाण्य है।

वेद के पौरुषेयत्व और अपौरुषेयत्व के सम्बन्ध में महर्षिकल्प श्री ओझाजी ने अपने शारीरक विमर्श में बीसियों मतों का उल्लेख किया है, अधिक विस्तार से जानने की इच्छा रखने वाले महोदय उक्त ग्रन्थ को पढ़ने का कष्ट उठावें।

कुछ भी हो, वेद चाहे पौरुषेय हों अथवा अपौरुषेय, परन्तु हैं वे ज्ञान-विज्ञान के सागर। भारतीय संस्कृति के अनुरागी गुणैकपक्षपाती जनों को उन्हें अर्थानुसन्धान-

Scanned with CamScanner

पूर्वक मनोयोग से पढ़ना चाहिये। यदि आधुनिक विज्ञान से अच्छी तरह परिचित महानुभाव संस्कृत भाषा का अच्छा अभ्यास करके, श्री ओझाजी के ग्रन्थों का सहारा लेकर वेदों को पढ़ने का कष्ट करें तो उन्हें अवश्य इस वेद-समुद्र से अनेक अभूतपूर्व रत्न प्राप्त हो सकेंगे—इसमें जरा भी सन्देह नहीं। वेद में विज्ञान-सम्बन्धी कुछ बातें तो हमने वेद का स्वरूप बताते हुए लिखी ही हैं, कुछ और भी निरुक्त की चर्चा के समय लिखेंगे।

Scanned with CamScanner